ताला-बंदी से एक रिपोर्ट

April 2018, JNU

At this juncture when issues such as compulsory attendance, fee /mess-bill hikes, social justice, gender question etc. have brought us at the school/factory gates, we, the student-workers, having refused the routine works of the class-rooms and the instructions of the teacher/floor-inspectors, have been discussing about the intensification of the movement. In the following interactions, what basically emerges is the lack of the solidarity across all sections of the working class in the university-factory. The indomitable spirit which keeps the lock-down illuminating for more than two weeks demands its spread in order to galvanize and bring us together. The bureaucrats of the organizations and the officials of the unions have increasingly become an obstacle to our desire to come together. The issues of attendance, biometrics, wage-cut, contractualisation, termination, surveillance, harassment have been plaguing the other sections of the working class too in this university-factory for a long time. Among the worst sufferers are the sanitation-workers, mess-workers and the gardening-workers. The operational representative mechanisms in the forms of unions, instead of bringing us together, divide us up, and ironically so, at the very moment when the time earnestly demands our unity. The body like UGBM is exclusive, and a play in the hands of the party/organization-bureaucrats. In the following interactions, this point has been highlighted. The open-house, which has come into being for the last few months, seeks to ensure the participation of us all as student-workers. However, this too is turning exclusive, confining itself to one section in this university-factory. In the light of the interactions, the gap with the other sections has been marked out. We can break this gap in and through the movement itself. At one of the school/factory gates, a student-worker asserts "we don't care of degree/certificate… this is just the beginning… It should have begun much earlier." Of course, it is beginning when we find out that we have to think and device the mechanism to come together. This report, in the shape interactions, also seeks solidarity among us if we really want to bring this university-factory to halt and listen our demands.

JNU ***में यह जो मूवमेंट चल रहा है उसके बारे में अपने ही अनुभव के सहारे कुछ बताइए***.

S1: देखिए मैं सेंटर ऑफ लिंगविस्टिक्स से हूं. पहले हम बात करते हैं इस सेंटर की स्पेसिफिक प्रॉब्लम्स क्या है. जैसे ही यह सेमेस्टर शुरू हुआ उसमें दो नए प्रोफेसर एपॉइंट हुए जिसके बारे में लगभग 90% स्टूडेंट्स को यह लगता है कि वह इस यूनिवर्सिटी में क्या किसी भी यूनिवर्सिटी में पढ़ाने के लायक नहीं हैं और सब को पता है कि जिस सेंटर में इनका सिलेक्शन हुआ उसमें इनसे अच्छे लोग थे. इसके बाद दूसरा मामला था 'सीट कट' का. पिछले साल जिसकी वजह से हमारे सीनियर्स को यहां आने का मौका नहीं मिला और इस बार भी कोई सीट नहीं है यानी कि हम लोग भी आगे नहीं पढ़ पाएंगे. उसके बाद मामला आता है अटेंडेंस का जिसको लेकर जनता के अंदर आक्रोश था लेकिन उसका कोई मैनिफेस्टेशन हो नहीं पा रहा था क्योंकि लोगों को लग रहा था कि यूनियन कुछ ना कुछ करेगी और यूनियन के प्रोटेस्ट में लोग जाते भी थे और फिर जब फाइनली चेयर पर्सन हटाए गए तब लोगों को लगा कि अब Union से कुछ नहीं होगा हम लोगों को ही कुछ करना पड़ेगा. फिर GBM हुआ अलग-अलग सेंटर्स में. फ्रेंच स्पेनिश इंग्लिश.. और इन सब लोगों ने आपसी समझ के साथ अपने अपने सेंटर लॉक डाउन कर दिया और फिर जब स्टूडेंट्स को दिखा कि इस बिल्डिंग में 7 सेंटर्स हैं जिसमें से चार ऑलरेडी लॉक डाउन हो चुके हैं तो हम क्यों अंदर ही गलियारे में बैठे हुए हैं जहां पर ठीक से बैठना भी नहीं हो पा रहा है, लोगों से बातचीत भी नहीं हो पा रही है. तो क्यों ना पूरा स्कूल ही आपसी सहमति से लॉक डाउन कर दिया जाए जिससे कि मूवमेंट आगे बढ़े. फिर हम लोगों ने आपस में सामंजस्य बैठा कर पूरे स्कूल को बंद कर दिया. लेकिन अब समस्या यहां आ रही है कि धीरे-धीरे मूवमेंट लंबा होता जा रहा है और लंबा होने से धीरे-धीरे लोगों का धैर्य खो रहा है. क्योंकि उन्हें दिख नहीं रहा है कि इसका एडमिनिस्ट्रेशन पर कुछ खास ज्यादा इफ़ेक्ट पड़ रहा है और लगातार एडमिनिस्ट्रेशन अलग-अलग सर्कुलर-नोटिस के जरिए लोगों को तरह तरह से डरा भी रहा है कि हट जाओ, लॉक डाउन हटा दो नहीं तो यह कर देंगे वह कर देंगे और धीरे-धीरे कैंपस में अफवाहें भी उड़ती है कि पुलिस आ गई है लोग कटर ले कर घूम रहे हैं जिससे बहुत सारे स्टूडेंट्स में डर का माहौल भी है कि हम अगर कुछ करेंगे तो हमारे ऊपर FIR हो जाएगा, डिग्री भी चली जाएगी. और तीसरी बात यह कि इस सेमेस्टर में अब सिर्फ 1 महीने बचे हैं और हर किसीका अपनी डिग्री पूरी करने के बाद अलग अलग तरीके की ख्वाहिश है. कुछ लोग विदेश जाना चाहते हैं, कुछ लोग दूसरे यूनिवर्सिटी में जाना चाहते हैं, कुछ लोग नौकरी करना चाहते हैं और उसके रुक जाने से यह सारा उनका आगे का जो प्रोग्राम है वह खत्म हो जाएगा. पर बात जहां तक मुद्दों की है तो लोग मुद्दे के साथ खड़े हैं लेकिन सवाल यह है कि फिर आगे आकर उस उन सारी चीजों के लिए कौन लड़ेगा उसके लिए कितने लोग आएंगे. लेकिन फिर भी इन सब के बावजूद मेजोरिटी है स्टूडेंट्स की जैसे SL में ही कम से कम 500 ऐसे लोग हैं जो इस लोक डाउन के साथ हैं कि यह सही है और इसको कंटिन्यू रहना चाहिए और जिसमें से करीब 100 लोगों का एक्टिव पार्टिसिपेशन है. वो किसी न किसी तरीके से गेट के पास आ जाते हैं घंटा दो घंटा बैठते हैं टाइम देते हैं और जो भी अन्य तरीकों से हो पा रहा है करते हैं. तो फिलहाल इसी तरीके से लॉक डाउन चल रहा है और जो लोग लॉक डाउन कर

रहे हैं उनका यह मानना है कि यह लॉक डाउन नहीं हटेगा. जिनको क्लासेस करनी है और हम तो यह मानते हैं कि क्लास तो करनी ही नहीं चाहिए, लेकिन फिर भी जिन लोगों को क्लासेस करनी है जाकर बाहर करें, एग्जाम दें. और पढ़ाई से प्रॉब्लम नहीं है. अटेंडेंस से प्रॉब्लम हमको क्यों है? अटेंडेंस कोई बहुत बड़ी समस्या नहीं है. हम रोज क्लास जाते हैं तो सिग्नेचर कर ही सकते हैं लेकिन उस सिग्नेचर करवाने के बहाने जो अन्य काम किए जा रहे हैं - रिजर्वेशन हटा देना है, सीट कट कर देना है .. वह सब हटाने के बाद आप किसी प्रोटेस्ट में भी हिस्सा नहीं ले पायेंगे क्योंकि आपको अटेंडेंस करनी है. तो ऐसे ही चल रहा है और हम लोग कोशिश कर रहे हैं.

S2: SIS में तो हम पांच छह लोग थे शुरू में. अटेंडेंस के स्टार्ट होने से बात शुरू हुई थी. जब मैं वैकेसन के बाद आया तब तक यह इशु आ चूका था. हम पांच छह लोग शुरू में एक्टिव हुए और क्लास में बात चीत स्टार्ट हुई. सोच रहे थे यूनियन जल्दी से अटेंडेंस पर गौर करेगी क्योंकि यह उनका भी मामला है. सभी को दिक्कत है और खासकर पॉलिटिकल एक्टिविटी खतरे में आएगा. Mphil-पीएचडी में जो टाइम मिलता था वह खतम हो जाएगा. लेकिन कुछ हुआ नहीं और इशु को दबाने का प्रयास होता रहा. हम सात आठ लोगों ने ही कोशिश कर ओपन हाउस मीटिंग की और यूनियन पर दबाव बनाया. दो तीन दिन तक उनके रेस्पोंसे का इंतज़ार हुआ, हमारी तरफ से यूनिटी का पूरा भरोसा भी जताया गया, MHRD मार्च में भी हम बहुत लोग गए. लेकिन युनिनन के कमिटमेंट के प्रति निराशा हाथ लगी. हमलोग डिप्रेसन में चले गए. इसी बीच रिजल्ट आ गया और viva की डेट आ गया और viva होने भी लगा. अटेंडेंस के साथ अब सोशल जस्टिस का सवाल भी केंद्र में आ गया. हमलोग नीचे से स्ट्राइक ओर्गनाइज़ करने की कोशिश शुरू की. कैम्पस में सामाजिक न्याय के लिए राजनीतिक संगठनों की तरफ से भी हमारे प्रयास को समर्थन मिल रहा था. हिंदी सेंटर के लोगों के साथ मिल कर हमलोगों ने घंटे दो घंटे ही सही प्रोटेस्ट किया और एक्साम रुकवाए रहे. लेकिन यूनियन के संगठनों की तरफ से इसके मुकाबले की इच्छाशक्ति नहीं बची थी. जब हमने इक्साम रुकवाया तो शिक्षकों की तरफ से हमारी वैधता केवल इस बिना पर खारिज की गयी कि हम यूनियन से अलग जाकर हड़ताल कर रहे हैं! इसी बीच SAA के छात्रों ने डीन और चेयर-पर्सन वाले इशु पर लॉक डाउन कर दिया. और फिर हमलोग ने भी अपने स्कूल में लॉक डाउन का प्रयास तेज कर दिया. अभी हम सप्ताह भर से लॉक डाउन पे बैठे हैं और रिजर्वेशन के इशु के इर्द-गिर्द आन्दोलन को बड़ा करने का प्रयास कर रहे हैं.

एक बात जो निकल कर आ रही है कि हरेक स्कूल या सेंटर अपने लोकल इशु के साथ-साथ अटेंडेंस या viva से जुड़े सामाजिक न्याय के प्रश्नों के लिए भी लॉक डाउन में गए. साइंस में सेक्सुअल हराश्मेंट के इशु को लेकर लॉक डाउन हुआ. हमें बताया गया है कि समाज विज्ञान के दो सेंटर ठेठ रिजर्वेशन के इशु पर इकट्ठे हुए हैं. डीन-चेयरपर्सन का मसला भी है. टीचर-स्टूडेंट सम्बन्धों का सवाल भी है. तो एक चीज़ जो हम जानने की कोशिश कर रहे हैं कि जैसे अलग-अलग सेंटर ने आपस में एक सामंजस्य बना कर स्कूल गेट को जाम किया वैसे ही क्या अलग-अलग स्कूल के बीच बात-चीत हो रही है? अगर स्कूल के सामने आप लोग जो मीटिंग करते हैं तो उसमें किस-किस तरह के प्रश्न उठते हैं. क्या वहां सिर्फ रिजर्वेशन के इशु पर चर्चा होती है या अन्य मुद्दे भी सामने आते हैं? मसलन ये 'ऑटोनोमी' वाला सवाल भी सामने है. तो जब आप अपनी मीटिंग में सॉलिडेरिटी बढ़ाने की बात करते हैं या कल क्या करना है, किसका क्या और कैसे साथ मिलेगा आदि रणनीतियों पर. तो उसमें इंटर-स्कूल ओपन हाउस या कोर्डिनेशन बिल्डिंग के लिए क्या-क्या बातें निकल कर आ रही है? साथ ही अलग अलग इशु के बीच सम्बन्धों को लेकर या इतने सारे बदलावों को लेकर, इनके कारणों आदि पर चर्चा कैसे होती है?

S1: यहाँ पर समस्या यह है कि स्कूल को तो यहां के लोगों ने लॉक डाउन कर दिया है, लेकिन जब बात आती है स्कूल के बीच कम्युनिकेशन की तो यूनियन की तरफ निगाहें चली जाती हैं कि यूनियन ही कुछ कर पाएगी. यूनियन ही दो या तीन स्कूल को लेकर कोई एक साधारण कार्यक्रम बनाएगी. लेकिन अभी यह लग रहा है कि यूनियन कुछ खास हमारे साथ है नहीं. और इंटर-स्कूल कम्युनिकेशन के मामले में अभी हम बहुत पीछे हैं. जैसे SIS और SL के बीच ही कोई समझदारी नहीं बन पाई है. हमको पता है कि जो लॉक डाउन कर रहे हैं उनके बीच आपस में बातचीत हो रही है. लेकिन एक ओवरऑल पिक्चर को लेकर के कोई एक जनरल मीटिंग या डिसीजन मेकिंग में पार्टिसिपेशन नहीं हो पा रहा है. यह एकदम संभव है कि स्कूल ऑफ़ लैंग्वेज की तरफ से लोग एक अपील करें एक दूसरे स्कूल के लोगों के साथ की एक ऐसा ओपन हाउस बुलाया जाए जिसमें सारे लोग अलग-अलग से एक साथ आ करके अपनी बात कह सकें. इस तरह के डिसीजन मेकिंग का प्रयास अब हो रहा है. पिछली मीटिंग यूनियन के साथ कल थी और वह मीटिंग काफी डिस्टर्ब करने वाली मीटिंग थी. यूनियन का अपना बिहेवियर पूरी तरह से सामने आया और जिसके मेरे सेंटर में एक अंडरस्टैंडिंग बनी है कि यूनियन से हम लोगों को अब ज्यादा उम्मीद नहीं रखनी चाहिए. वे लोग जो करते हैं करें हम लोगों को अपने दम पर कुछ करना होगा. लोग यहां तक कि अपनी डिग्री, अपने सेमेस्टर कुर्बान करने के लिए तैयार हैं और वह भी ठीक-ठाक संख्या में. जहां तक लिंग्विस्टिक्स का सवाल है 60% अपना रजिस्ट्रेशन और डिग्री दांव पर लगाने को तैयार हैं. उनको कुछ खास प्रॉब्लम नहीं है. उनको चिंता है कि ये सब ऐसे रूल्स हैं कि आगे आने वाले छात्रों के लिए लड़ना भी मुश्किल होगा. तो हमलोग कमसे कम ऐसा माहौल तैयार होने नहीं देंगे.

S4: देखिये इशुस के आपसी सम्बन्धों को लेकर यूनियन की समझदारी क्या है इसके बारे में आपस में बात-चीत अभी नहीं होती. लेकिन हम लोगों को तीन समस्याएं फिलहाल दिख रही हैं कि एक तो 'रिजर्वेशन' का प्रॉब्लम है और इस एजेंडे को बहुत बुरी तरीके से पुश किया जा रहा है, दूसरी बात है

फीस बढ़ाने को लेकर कि बेच देना है यूनिवर्सिटी को और तीसरी बात हाइआर्कि को बनाए रखने की. तो हमारी समझदारी है इन तीन चीजों के इर्द-गिर्द प्रोटेस्ट होना चाहिए. और अभी बहुत कम समय हुआ है मूवमेंट में. लोगों की अंडरस्टैंडिंग है कि एक तो सरकार का पार्टीकुलर एजेंडा है जिस को पुश किया जा रहा है. और बहुत कुछ यह हमारे सरकार के हाथ में भी नहीं है. बाहर से चीजें निर्धारित हो रही है. सर्विलांस का चक्कर है. लोगों के बारे में सब कुछ जान लेने का चक्कर है. यह कहीं और से चल रहा है. और यह समस्या है कि लोगों के सामने वही चीजें डाली जाए जो उनके इंफॉर्मेशन डेटाबेस के अनुसार हो. कुल मिलाकर लोगों की इच्छाओं को कंट्रोल करने का सवाल है.

S3: यह बात सही है कि समस्या के कारणों को लेकर कोई ठोस मीटिंग हमारी नहीं हुई है. इसका मेन रीज़न है की हमारी ज़्यादातर एनर्जी स्कूल के छात्रों को मोबेलाईज़ करने में चली जाती है. हम MA के स्टूडेंट हैं और इस मूवमेंट की कमजोरियों को समझने की कोशिश कर रहे हैं और कमजोरियां बहुत सारी हैं. हमारे कई सेंटर्स ने तो कह दिया है कि हम स्टेटस को. के सपोर्टर हैं. और वे मानते ही नहीं कि viva में कोई भेद-भाव होता है! ऐसी एक मीटिंग की ज़रुरत मैं समझ रही हूँ जहाँ JNU कम्युनिटी के लोग आयें और इस बात पर बात-चीत हो कि समस्या दरअसल क्या है और हम मूवमेंट में क्या कर रहे हैं? लेकिन जिस तरह SAA में चर्चाएँ हो रही हैं वैसा हम नहीं कर पा रहे. एक तो उनका सेंटर छोटा है फिर भी कमलोग ही सही सब साथ साथ आये हैं. उनका परचा पढ़ के भी लगा कि हम कोई 'SAVE JNU' की बात नहीं कर रहे. हम बात कर रहे हैं 'नयी राजनीतिक चेतना' की. और इसको ले कर कोई रोबस्ट ओपन हाउस नहीं हुआ है. व्यक्तिगत रूप से हमलोगों ने पिछले दिनों नाफे कमिटी की रिपोर्ट पढ़ी की चीजें ज्यादा स्पष्ट हों.

S1: मीटिंग ऑर्गेनाइज कर सकते हैं लेकिन ऐसी मीटिंग करने से पहले हमें एक तैयारी चाहिए. हमको स्टूडेंट्स के बीच में जाना पड़ेगा मैं आपको बता दूं कि लास्ट मीटिंग में यह पॉइंट यूनियन के सामने उठाया गया. ऐसा नहीं है कि स्टूडेंट्स हमारे खिलाफ हैं बट वह आ नहीं रहे. तो सवाल यह है कि उन तक कैसे पहुंचा जाए. तो यूनियन का इस पर कोई खास जवाब नहीं था. उनका तो कहना है कि हमको मूवमेंट लीड करना है हम किसी को रूम से उठाने थोड़े जाएंगे? लेकिन हम लोगों का मानना है कि हम को रूम पर ही जाना पड़ेगा. लोगों से बात करने और लोगों को समझाना पड़ेगा कि एक ऐसी मीटिंग हम लोग ऑर्गेनाइज करने के बारे में सोच रहे हैं. और हम बिल्कुल ऐसी मीटिंग ऑर्गेनाइज कर सकते हैं और बिना कोई ऐसी मीटिंग ऑर्गेनाइज किये हमको कुछ खास हाथ लगने वाला नहीं है. जब तक लार्ज मासेस के बीच से कुछ सलूशन उभरकर नहीं आता तब तक हम 10 लोग यहां पर बैठकर कुछ खास डिसाइड नहीं कर सकते और उसका कोई फैसला भी नहीं होने वाला है और ऐसा करने से यह भी होगा कि जो लोग हमारे साथ हैं वह भी नाराज हो जाएंगे कि कुछ लोग खुद में डिसाइड करके कुछ भी तय कर ले रहे हैं जो कि सही नहीं है. तो हम को एक ऐसी मीटिंग चाहिए और बिल्कुल हम ऑर्गेनाइज कर सकते हैं और इसी को लेकर हम लोग सेंटर ऑफ लिंगविस्टिक के लोग और फ्रेंच स्पेनिश इंग्लिश के लोगों से बात करेंगे कि एक बड़े ओपन हाउस या जीबीएम टाइप कुछ और किया जाए. UGBM के पुराने मैकेनिज्म में कोई विश्वास नहीं है. हमको पता है कि वहां क्या होता है. वहां पर कुछ प्रपोजल होंगे और वोटिंग होगी और प्रपोजल और वोटिंग से कुछ खास हमारे मूवमेंट को होने वाला नहीं है क्योंकि हम लोग आपस में बात कर रहे हैं कि किसी के पास अभी कुछ भी कंक्रीट सलूशन नहीं है. तो अभी हम सीधे सोल्यूशन पर जा नहीं सकते. पहले तो समस्याओं को समझना है और हमारे पास जो अवेलेबल ऑप्शन हैं प्रोटेस्ट के उनके ऊपर चर्चा करनी पड़ेगी. तो वोटिंग से कुछ खास होगा नहीं और जहां तक प्रोटेस्टेंट का सवाल है वह लॉक डाउन कंटिन्यू करने के पक्ष में है.

S4: कुछ लोग होंगे जिनकी समझदारी में समस्या है. ज्यादातर लोगों को चीजें समझ में आ रही हैं. लेकिन उनके सामने प्रोटेस्ट का एक पूरा पैटर्न है कि हमारे यहाँ कैसे प्रोटेस्ट हुए हैं और निष्फल हुए हैं. ज़यादातर स्टेज्ड प्रोटेस्ट हुए हैं. हमारे कैम्पस में. उसकी वजह से जो पुराने लोग हैं उनका प्रोटेस्ट से विश्वास उठ गया है कि ऐसे ही होता है इसका कुछ खास होता नहीं है. मूवमेंट लगातार होते रहे हैं लेकिन उनका नेचर ऐसा रहा है कि कुछ हासिल नहीं हुआ. एक के बाद एक नई चीजें होती गई और हम पुरानी को छोड़ते गए. तो पुराने लोगों की उदासीनता का एक बड़ा कारण यह भी है. हमलोगों को लगता है इसे ऐसे ही छोड़ा नहीं जा सकता. हमलोगों को कुछ करना ही होगा. भविष्य में क्या होगा उस पर बोल पाना संभव नहीं है लेकिन मुझे अभी ऐसा नहीं लग रहा है कि यह सारे मूवमेंट्स इतनी जल्दी फिसल आउट हो सकते हैं. हो सकता है कि शायद इंटेंसिटी में कुछ कमी आए लेकिन मुझे लगता है कि अगर कमी आएगी तो कुछ टाइम बाद फिर से नयी एनेर्जी आए जाएगी और कहीं ना कहीं से उसको पुश मिलता रहेगा. जो छात्र यहां पिछले साल आया है या उससे पहले आया है तो उनके दिमाग में JNU की एक खास इमैजिनेशन है कि यहां पर एक जेंडर जस्टिस या सोशल जस्टिस या फिर एक फ्रीडम है भले ही उनका एक लेबल ना रहा हो चीजें इतनी परफेक्ट न रही हो. लेकिन फिर भी कुछ ना कुछ था हमारे पास. लेकिन जब वह यहां पर आए तो उनको उनके सामने सारी चीजें उनसे छिनती नजर आई और जो लोग एक लंबे समय से हैं वह उदासीन हो गए चीजों के प्रति. नए लोगों में ज्यादा एनर्जी है इन चीजों का विरोध करने की. एक लड़की है जिसकी चिंता यह नहीं है कि उसकी डिग्री चली जाएगी. उसकी चिंता यह है कि आने वाले लोग कहां से डिग्री पाएंगे. दूसरी तरफ जो लोग यहां 5 साल से रह रहे हैं जेएनयू में उनके पास वह चिंता कम दिखाई देती है. पता नहीं क्यों?

पिछले दस सालों से देश और दुनिया की यूनिवर्सिटीस में लगातार संरचनागत परिवर्तन हो रहे हैं. JNU का ही उदाहरण ले तो ठेकेदारी आने के बाद से यहाँ के वर्क लाइफ में इमरजेंसी बढती गयी है. मजदूरों के अटेंडेंस के लिए कब से ही बायोमैट्रिक्स लग गए. पांच मिनट की देरी मतलब एक दिन की

पगार गयी. नौकरी से निकला जाना सुपरवाइजर की मर्जी पर है. साइंस सेंटर में बॉयोमीट्रिक्स लगे चार-पांच साल हो गए. लैब में छात्र न केवल दस-बारह घंटे काम करने को मजबूर हैं बल्कि जाति-जेंडर के हिंसक भेद-भाव से उत्पीड़ित हैं. सामाजिक अन्याय केवल छात्र समुदाय के बीच नहीं बल्कि सफाई कर्मचारियों से लेकर टीचरों के घरों में काम करने वाली डोमेस्टिक वर्कर्स भी उत्पीड़ित हैं. कहने का अर्थ यह कि जब हम 'सामाजिक न्याय' और 'नयी राजनीतिक चेतना' की बात करते हैं तो क्या JNU को चलाने वाले सारे सामाजिक सम्बन्धों में इसे देखते हैं या केवल छात्रों के बीच ही इसे खोज रहे हैं? और अगर संकट केवल छात्रों का नहीं है तो क्या हम एक ऐसी मीटिंग नहीं चाहेंगे जहाँ वर्कर, स्टाफ, स्टूडेंट या टीचर या दूकानदार सभी शामिल हों?

S6 : एक बात तो यह है कि सामाजिक न्याय का प्रश्न केवल रिजर्वेशन के लागू होने का नहीं है. यह जातिगत भेद-भाव के खिलाफ एक वास्तविक आन्दोलन है. मसलन हम देख रहे हैं कि ओपन क्लास रूम को एक ज्यादा डेमोक्रेटिक और सोशल जस्ट form of 'टीचिंग-लर्निंग' की तरह देखा जा रहा है. लेकिन क्या वास्तव में ऐसा है? 'जात-पात तोड़ो मंडल' से अपने पत्राचार में अम्बेडकर ने 'जातियों के उन्मूलन' नामक अपने पर्चे के राजनीतिक महत्व को रेखांकित करते हुए बताया था कि 'गुरु' (Teacher) / 'अंत्यज' (Student) के सम्बन्धों में रैडिकल परिवर्तन के बिना 'जाति के उन्मूलन' का विचार अस्वीकार्य रहेगा. क्लास रूम की संस्था में अगर गुरु गुरु ही रहे और छात्र छात्र तो चाहे वह किसी बिल्डिंग के अन्दर हो या खुले में, फर्क नहीं पड़ता. इसलिए सवाल केवल viva में रिजर्वेशन के लागू होने का भी नहीं है. या किसी अन्य अफर्मेटिव एक्शन का नहीं है. JNU में अगर पिछले तीस सालों से सामाजिक न्याय का सवाल हाशिये पर है तो इसके पीछे रिजर्वेशन का लागू न होना केवल एक कारण है. दूसरी तरह से कहें तो हमें देखना होगा की JNU के सफाई कर्मचारियों के लिए सामाजिक न्याय का क्या महत्व है? और इसके लिए ज़रूरी है कि हम किसी ऐसी मीटिंग को बुलाएं जहाँ वर्कर और छात्र दोनों सामाजिक न्याय के प्रश्नों पर खुल कर बात-चीत कर सकें. आखिर ऊंच-नीच और भेद-भाव को बनाये रखने में यूनिवर्सिटी संस्था और परिवार या धर्म क्या एक जैसा रोल नहीं निभाती? रोहित वेमुला आन्दोलन के बाद यह स्पष्ट है कि दलितवाडा/वेलिवाड़ा हर यूनिवर्सिटी की सच्चाई है. हमें अपने आन्दोलन में वेलिवाड़ा की शक्ति को पुनर्संयोजित करना चाहिए. और यह तभी संभव है जब वेलिवाड़ा स्वयं movement of social justice में बदल जाए जहाँ कोई भी बाहरी और अस्पृश्य नहीं, गुरु या अंत्यज नहीं. बल्कि बहिष्कृतों का वास्तविक लोकतंत्र संभव हो.

S4: हमारा कहना है कि इस तरह का जो रैडिकल डिसीजंस है स्टूडेंट्स का जो कि पहले किसी भी सूरत में संभव नहीं था. तो इसका मतलब यह भी है कि स्टूडेंट अपने लाइफ में कुछ इस तरह के क्राइसिस के सामने है जहां वह किसी दूसरे तरह का डिसीजन लेना या दूसरे तरह के ऑपर्चुनिटी वे ऑफ प्रोटेस्ट या मूवमेंट के मेथड्स को ही पूरी तरह को खारिज कर रहा है और इसको समझ रहा है कि उस तरह से कुछ नहीं हो सकता. यानी कि एकेडमिक्स में इस तरह के आने वाले लोग जो पढ़ना लिखना चाहते हैं ,जो चाहते हैं कि अपना नॉलेज प्रोडक्शन पर अपनी लाइफ पर हमारा कंट्रोल हमसे छिन न जाए. मतलब हम अपने जीवन को जैसा जीना चाहते हैं या हम जैसे पढ़ना चाहते हैं या जैसे नॉलेज इंक्वायरी करना चाहते हैं- वह हम तय करेंगे. कोई बाहर से आकर हमारे लिए टाइम निर्धारित नहीं कर सकता. हमारे डिसीजन, हमारा अपना सपना, सब मैनिफेस्टेशन करने का अधिकार मेरा है. यह एनेर्जी जो स्टूडेंट के बीच है- अपने शरीर, अपने काम अपने लेबर पावर पर अपना नियंत्रण पाने इच्छा बहुत स्ट्रोंग है. जब मैं 2013 में कैंपस में आया था और मेरे बाकी साथी जो लोग आए थे तो एक अलग बात थी. मेरा इंक्लिनेशन कभी राइट की तरफ नहीं था और लेफ्ट के बारे में कुछ ज्यादा पता नहीं था. एक सुपरफिसिअल ज्ञान था. इधर उधर से कुछ किताबें पढ़ी थी. लोग दौड़ते हुए दिखे कि आप इस पार्टी में आ जाओ, उस पार्टी में ज्वाइन कर लो ऐसा कर लो. और आप उसमें चले जाते हैं .एक भीड़ आपको खींच रही है तो कहीं ना कहीं आप एडजस्ट हो जाते हैं और यही चल रहा था. और मैं जिन लोगों को जानता हूं उनके साथ यही हुआ कि उनको किसी ना किसी तरीके से खींच लिया गया. पर्सनल इमोशनल कारणों से कुछ रुक गए और कुछ उस को तोड़ते हुए आगे निकल आये. लेकिन 9 फरवरी 2016 के बाद कैंपस का एक अलग पिक्चर क्लियर हुआ पूरे समाज के सामने जो कि पहले नहीं था. यहाँ आने वाले लोग बहुत कुछ तय करके यहाँ आये हैं. इनमें कोई ABVP के साथ नहीं है. लेकिन यह भी नहीं पता की कहाँ हैं. किसके साथ हैं. यहां पर लोगों को समस्या आ गई है. हम एक ऐसे दौर में हैं जहां पर लोग खुद को समझ नहीं पा रहे हैं. समस्याएं हैं .पॉलिटिकल समस्या है. इकोनॉमिक समस्या है. सोशल समस्या है . और उसका कुछ सलूशन नहीं है. लोग स्टूडेंट के रूप में खुद को समझने की कोशिश कर रहे हैं. उनको पता नहीं कि कहां जाया जाए, क्या किया जाए. ऐसा नहीं कि लोग काम ढूंढ रहे हैं. उस चीज को खोजने आए हैं कि काम और ज्ञान का जो राज चल रहा है उससे कैसे बाहर निकला जाए.

S5: मैं यहाँ BTech कर के आया हूँ. वहां पहले साल से ही मेरा मन उचट गया था. 9 feb के बाद यहाँ आने की इच्छा बढ़ गयी. पर जब यहाँ आया तो कैम्पस का इमेजिनेशन पूरी तरह दूसरा लगा. 'We debate, we discuss, we are JNU' जैसा कुछ भी नहीं है. यहाँ से ज्यादा रैडिकल प्रोटेस्ट दूसरी जगहों पर हो रहे हैं. इस लॉक डाउन के साथ यह बात स्पष्ट हो गयी है कि वाम छात्र संगठन और इनकी पैरेंट पार्टियाँ पूरी तरह से 'रिविसनिस्ट' हो गयी हैं. चुनाव जीतना इनका मुख्य काम है.

S6 : जहाँ तक नयी राजनीतिक चेतना का सवाल है तो यह भी देखना चाहिए कि सामाजिक न्याय के लिए काम कर रहे अलग-अलग आर्गेनाईजेशन या ग्रुप्स संसदीय लोकतंत्र की प्रतिनिधिमूलक और चुनावी राजनीति से अलग नहीं हैं. इसलिए मूवमेंट को प्रतिनिधि स्वर देने की इनकी कोशिशें उन समस्याओं से ऊपर नहीं हैं जो संसदीय वाम की राजनीति में है. इसलिए यह देखना भी ज़रूरी है कि आने वाले दिनों में लॉक डाउन के साथ सामाजिक न्यायवादी संगठनो के अंतर्विरोध कैसे स्पष्ट होते हैं. इसके लिए ज़रूरी है कि मूवमेंट स्वयं को लेकर सेल्फ रेफ्लेक्टिव हो. SAA की तरफ से जो परचा सामने आया है उसमे तीन चीजें ध्यान देने लायक है. पहली चीज़ तो यह कि यूनिवर्सिटी एक फैक्ट्री है. दूसरी चीज़ है General Intellect का उद्भव. और तीसरी बात है नए कर्ताओं (new subjective body) का नामकरण (नेमिंग). अगर यह मान भी लिया जाय कि ये तीनों चीजें महज विचार (Idea) हैं तो इस विचार की सार्भौमिक एकांतिकता (universal singularity) पर्चे में रेखांकित नहीं होती. दूसरी ओर अगर फैक्ट्री है तो इसे चला कौन रहे हैं? और स्टूडेंट इस फैक्ट्री में क्या कर रहे हैं? पूँजी का संचय इस फैक्ट्री के माध्यम से कैसे हो रहा है? मुनाफा कौन-कौन चाट रहा है? 'चमचागिरी' कैसे-कैसे चल रही है? फैक्ट्री के मजदूर क्या कर रहे हैं? मार्क्स के अनुसार 'मास वर्कर' और 'general intellect' सहजात हैं. अगर यह सही है तो JNU के 'मास वर्कर' आज फैक्ट्री/स्कूल गेट पर 'वाइल्ड कैट स्ट्राइक्स' / 'लॉक डाउन' क्यों कर रहे हैं? और क्या 'मास वर्कर' के रूप में नए कर्ताओं को ही कुछ लोग 'प्रिकेरियट्स' नहीं कह रहे? और फिर यह कि 'प्रोलेतेरिअत' क्या हमेशा से ही 'प्रिकेरिअट्स' नहीं थे? इसलिए अपनी सकारत्मक ऊर्जा और सराहनीय प्रयास के बावजूद अगर इन सब सवालों को एड्रेस नहीं किया गया तो SAA का परचा केवल भाषाई सार-संग्रहवाद का उदाहरण बन कर रह जाएगा. इसलिए यह और भी ज़रूरी है कि इस बात चीत में सफाई कर्मचारी या मेस वर्कर आदि को भी शामिल किया जाए. हमारे मुद्दे पर नहीं उनके अपने सैकड़ों मुद्दे हैं जिन पर वे लगातार संघर्ष में हैं. उन्हें अपनी बात भी रखनी है. वो भी इस फैक्ट्री के मास वर्कर हैं. और स्टूडेंट इस गैप को समझ रहे हैं. यह गैप शायद इसलिए भी है कि छात्र खुद को 'मास वर्कर' के रूप में realize नहीं कर रहे हों. जीवन स्थितियों में एक साथ लेकिन विचारधारात्मक चश्मे के कारण अलग-अलग महसूस करना एक समस्या है. यह आन्दोलन इससे जूझ रहा है. और राह निश्चित रूप से कठिन है.

ZERO HISTORY